कस्तूरबागांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित

# कस्तूरबाग्राम रूरल इंस्टीट्यूट

कस्तूरबाग्राम, इंदौर (म. प्र.)

स्वशासी कन्या महाविद्यालय, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से संबद्ध

स्थापना वर्ष 1963 : http://www.kgri.org : 0731-2874065

kri.extension@gmail.com

## कक्षा : बी. ए. प्रथम वर्ष
## विषय :– अर्थशास्त्र
## सेमेस्टर – II

1. पाठ्यक्रम का कोड –
2. पाठ्यक्रम का शीर्षक – भारत में कृषि विपणन एवं वित्त
3. पाठ्यक्रम का प्रकार – माईनर – II
4. पाठ्यक्रम अध्ययन की उपलब्धियां :–
   1. इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी वर्तमान और प्राचीन कृषि की विपणन एवं वित्त व्यवस्था के व्यापक अवलोकन पर प्रकाश डाल कर विश्लेषणात्मक कौशल को तेज करने में समक्षम होंगे। वे कृषि विपणन एवं वित्त व्यवस्था से संबंधित मुद्दों से परिचित होंगे। छात्राएं मध्य प्रदेश कृषि विपणन एवं वित्त व्यवस्था के व्यापक अवलोकन से परिचित होंगी। वे भारतीय कृषि विपणन एवं वित्त व्यवस्था से संबंधित घटनाओं और विषयों को विकसित, विश्लेषण और व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
5. केडिट मान – सैद्धांतिक – 04
6. कुल अंक – 30+70=100 न्यूनतम उत्तीर्ण अंक – 35
7. व्याख्यान की कुल अवधि– 90 घंटे

| इकाई | पाठ्यक्रम की विषयवस्तु |
|---|---|
| इकाई–1 | **प्राचीन भारतीय कृषि विपणन एवं वित्त का परिचय :–**<br>1. प्राचीन भारतीय कृषि की मुख्य विशेषताएं<br>2. प्राचीन भारत में कृषि बाजारों के स्वरूप<br>3. प्राचीन भारतीय कृषि वित्त की मुख्य विशेषताएं<br>4. प्राचीन भारत में कृषि वित्त के स्रोत<br>5. प्राचीन भारत के अंतराष्ट्रीय विपणन में कृषि का योगदान<br>**गतिविधियां**– 1. प्राचीन भारतीय कृषि विपणन और वित्त की विशेषताआं का चार्ट बनाना।<br>2. उपरोक्त विषयें पर प्रस्तुतियां |
| इकाई–2 | **भारतीय कृषि विपणन का परिचय :–**<br>1. कृषि विपणन का अर्थ एवं परिभाषा<br>2. भारत में कृषि विपणन की विभिन्न प्रणालियां और विशेषताएं<br>3. भारत में कृषि विपणन की समस्याएं एवं सुझाव<br>4. भारत में सहकारी विपणन<br>**गतिविधियां**– 1. भारतीय कृषि विपणन की विशेषताओं का चार्ट बनाना। |
| इकाई–3 | **भारत में कृषि वित्त :–**<br>1. भारत में कृषि वित्त की आवश्यकता<br>2. भारत में कृषि वित्त के स्रोत – गैर संस्थागत स्रोत, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, सहकारी समितियां, वाणिज्यिक बैंक<br>3. राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक – नाबार्ड –<br>4. कृषि वित्त की समस्याएं और सुधार के लिए सुझााव<br>**गतिविधियां**– 1. संबंधित विषयों पर समूह चर्चा 2. संबंधित विषया पर वाद–विवाद |

Contd------2

| | |
|---|---|
| इकाई–4 | **कृषि विपणन एवं वित्तीय व्यवस्था से संबंधित अन्य विषय :–**<br>1. कृषि विपणन व्यवस्था में उपभोक्ता खाद्य सुरक्षा, भारतीय खाद्य निगम<br>2. भारत में कृषि भंडारण व्यवस्था<br>3. वयदा कारोबार और भारतीय कृषि<br>4. आधुनिक कृषि विपणन एवं वित्त व्यवस्था में सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान, ई–नाम प्लेटफार्म<br>**गतिविधियां–** 1. संबंधित विषयों पर वाद–विवाद एवं समूह चर्चा करना। |
| इकाई– 5 | **मध्यप्रदेश में कृषि विपणन एवं वित्त :–**<br>1. मध्यप्रदेश मं कृषि विपणन<br>2. मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन, मंडी बोर्ड कार्य एवं कार्य प्रणाली<br>3. मध्यप्रदेश में कृषि वित्त<br>**गतिविधियां–** 1. समाचार पत्रों पर चर्चा 2. चार्ट एवं आरेखों के माध्यम से प्रस्तुति |
| | **संदर्भ ग्रंथ :**<br>1- अग्रवाल एन,एल, भारतीय कृषि का अर्थ तंत्र, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी<br>2- मिश्र जय प्रकाश, कृषि अर्थशास्त्र, साहित्य भवन प्रकाशन आगरा<br>3- गुप्ता एसबी, कृषि अर्थशास्त्र, एसडीबी, प्रकाशन, आगरा<br>4- मिश्रा एवं पुरी भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालय पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली<br>5- रूद्रदत्त एवं सुंदरम –भारतीय अर्थव्यवस्था, एस.चंद एण्ड संस, नई दिल्ली<br>6- जेपी. मिश्रा, भारतीय अर्थव्यवस्था, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा<br>7- Panagariya, Arvind, India Unlimited,. Reclaiming the lost Glory, Harper Collins Publishers, India.<br>8- Hariharan, N.P., Lights and Shades of Indian Economy, Vishal Publishing Co.<br>9- Uma Kapila Indian Economy since Independence, Academic Foundatin, Delhi<br>10- Reserve Bank of India Annual Reports.<br>11- Annual Economic Survey, Government of India. |

कस्तूरबागांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित

# कस्तूरबाग्राम रूरल इंस्टीट्यूट

कस्तूरबाग्राम, इंदौर (म. प्र.)

स्वशासी कन्या महाविद्यालय, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से संबद्ध

स्थापना वर्ष 1963

kri.extension@gmail.com : http://www.kgri.org : 0731-2874065

**कक्षा : बी. ए. प्रथम वर्ष**

**विषय :– अर्थशास्त्र**

**सेमेस्टर – II**

1. **पाठ्यक्रम का कोड –**
2. **पाठ्यक्रम का शीर्षक – भारतीय अर्थव्यवस्था का परिचय**
3. **पाठ्यक्रम का प्रकार – मेजर – III**
4. **पाठ्यक्रम अध्ययन की उपलब्धियां :–**
   1. इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी वर्तमान और प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था के व्यापक अवलोकन पर प्रकाश डाल कर विश्लेषणात्मक कौशल को तेज करने में सक्षम होंगें। वे कृषि, उद्योग, विदेशी व्यापार, आर्थिक नियोजन और ाारत की विभिन्न आर्थिक समस्याओं से संबंधित मुद्दों से परिचित होंगे। विद्यार्थी मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था के व्यापक अवलोकन से परिचत होंगें। वे भारतीय अर्थव्यवस्था से संबंधित घटनाओं और मुद्दों को विकसित, विश्लेषण और व्याख्या करने में सक्षम होंगें।
5. **केडिट मान – सैद्धांतिक – 06**
6. **कुल अंक – 30+70=100 न्यूनतम उत्तीर्ण अंक – 35**
7. **व्याख्यान की कुल अवधि– 90 घंटे**

| इकाई | पाठ्यक्रम की विषयवस्तु |
|---|---|
| इकाई–1 | **प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था का परिचय :–**<br>1. प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताएं<br>2. राष्टीय आय की प्राचीन भारतीय अवधारणा<br>3. प्राचीन भारत में प्राकृतिक संसाधनों की अवधारणाएं<br>4. भारतीय ज्ञान प्रणाली के संबंध में –<br>क) कृषि ख) उद्योग ग) आंतरिक और अंतराष्टीय व्यापार अवधारणा और मुख्य विशेषताएं घ) श्रम विभाजन इ) व्यापार केंद्र और परिवहन<br>**गतिविधियां– प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं का चार्ट बनाएं। उपरोक्त विषयों पर प्रस्तुतियां।** |
| इकाई–2 | **भारतीय अर्थव्यवस्था का परिचय :–**<br>1. भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताएं<br>2. राष्ट्रीय आय की प्रवृत्तियां और क्षेत्री संरचना<br>3. श्रमशक्ति का क्षेत्रीय वितरण<br>4. प्राकृतिक संसाधन निधियॉं – भूमि, जल, पशुधन, वन और खनिज<br>5. आधारभूत संरचना, बिजली, परिवहन और संचार<br>6. जनांकिकीय विशेषताएं – जनसंख्या की संरचना, आकार और वृद्धि दर<br>7. अति जन संख्या की समस्याएं, और कारण तथा जनसंख्या नीति<br>**गतिविधियां– भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं का चार्ट निर्माण।** |
| इकाई–3 | **भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि और उद्योग : –**<br>1. भारतीय कृषि भूमि उपयोग पैटर्न और भूमि सुधार की प्रकृति, महत्व और विशेषताएं<br>2. कृषि उत्पादन और उत्पादकता से प्रवृत्तियां, हरित कांति, उद्देश्य, उपलब्धियां और विफलताएं, कृषि से नई तकनीक<br>3. कृषि वित्त बीमा और विपणन<br>4. भारत के परंपरागत उद्योग<br>5. स्वतंत्रता के बाद भारत का औद्योगिक विकास एवं भारत की औद्योगिक नीतियों, औद्योगीकरण में सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र की भूमिका<br>6. एमएसएमई. परिभाषा, विशेषताएं और इसकी भूमिका<br>7. स्टार्टअप इंडिया, मे इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत @247, डिजिटल इंडिया मिशन।<br>**गतिविधियां– संबंधित विषयों पर समूह चर्चा एवं विवेचना। संबंधित विषयों पर विवेचना।** |

Contd------2

| | |
|---|---|
| **इकाई–4** | **विदेशी व्यापार एवं विकास :–**<br>1. भारत का विदेशी व्यापार – महत्व, संरचना और दिशा<br>2. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश; बहुराष्ट्रीय निगमों की भूमिका<br>3. भारत में विनिवेश<br>4. भारत में नियोजन<br>5. नीति आयोग संरचना एवं कार्यप्रणाली<br>6. भारत में आर्थिक स्थिति का विश्लेषण, भारत में रोजगार की प्रस्थिति का विश्लेषण<br>7. भारत सरकार की प्रमुख समाज कल्याण योजनाएं, स्वच्छ भारत मिशन, उज्जवला योजना, आयुष्मान भारत, अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना<br>**गतिविधियां– उक्त विषयों से संबंधित समाचार पत्रों में प्रकाशित लेख/ समाचार पर चर्चा। चार्ट और आलेखों के माध्यम से प्रस्तुति।** |
| **इकाई– 5** | **मध्यप्रदेश की अर्थव्यस्था :–**<br>1. मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताएं<br>2. मध्यप्रदेश के प्राकृतिक संसाधन– भूमि, वन, जल और खनिज<br>3. मध्यप्रदेश में कृषि की क्षेत्रीय विषमताएं एवं प्रवृत्तियां<br>4. मध्यप्रदेश में जैविक खेती और पॉली हाउस<br>5. मध्यप्रदेश की आधारभूत संरचना – बिजली, परिवहन और संचार<br>6. मध्यप्रदेश में औद्योगिक विकास, मध्यप्रदेश में बुनियादी ढॉचा, विकास– बिजली, परिवहन और संचार<br>7. मध्यप्रदेश मे पर्यटन का विकास<br>8. मध्यप्रदेश सरकार की प्रमुख समाज कल्याण योजनाएं<br>**गतिविधियां– उक्त विचारों से संबंधित समाचार पत्रों में प्रकाशित लेख/ समाचार पर चर्चा। चार्ट और आलेखों के माध्यम से प्रस्तुति।** |
| | **सार बिंदु – क्षेत्रीय संरचना, भारत के मानवीय संसाधन, भारतीय कृषि, औद्योगिकरण, आधारभूत संरचना, प्रत्यक्ष विदेशी।** |
| | **संदर्भ ग्रंथ :**<br>1- आहूजा एच.एल. – उच्चतर समष्टि अर्थशास्त्र, एस.चन्द्र एण्ड कंपनी लि. दिल्ली<br>2- झिंगन एम.एल. – समष्टि अर्थशास्त्र, वृंदा पब्लिकेशन, नई दिल्ली<br>3- सेठी टी.टी. – समष्टि अर्थशास्त्र, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा<br>4- वैश्य एम.सी. – समष्टि अर्थशास्त्र, विकास पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली<br>5- राणा. के.सी. – एव के.एन. वर्मा – समष्टि आर्थिक विश्लेषण,विशाल पब्लि.,जालंधर |

.....

कस्तूरबागांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित

# कस्तूरबाग्राम रूरल इंस्टीट्यूट

कस्तूरबाग्राम, इंदौर (म. प्र.)

स्वशासी कन्या महाविद्यालय, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से संबद्ध

स्थापना वर्ष 1963

kri.extension@gmail.com

: http://www.kgrl.org

: 0731-2874065

## कक्षा : बी. ए. प्रथम वर्ष
## विषय :– अर्थशास्त्र
## सेमेस्टर – II

1. पाठ्यक्रम का कोड –
2. पाठ्यक्रम का शीर्षक – समष्टि अर्थशास्त्र
3. पाठ्यक्रम का प्रकार – मेजर – II
4. पाठ्यक्रम अध्ययन की उपलब्धियां :–
   2. इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी समष्टी अर्थशास्त्र एवं व्यक्ति अर्थशास्त्र के मध्य अंतर सामान्य समष्टि अर्थशास्त्र चरों, राष्टीय आय, उत्पादन रोजगार के निर्धारण का क्लासिकल एवं किन्सियन दृष्टिकोण को समझ सकेंगे।
   3. विद्यार्थी अर्थव्यवस्था में उपभोग एवं निवेश की कार्यप्रणाली को समझने तथा IS-LM वक्र की उत्पत्ति कर अर्थव्यवस्था की कार्यप्रणाली को समझने में सक्षम होंगे।
   4. विद्यार्थी मुद्रा स्फीति, मंदी, अवस्फीति और व्यापार चक्र के विभिन्न सिद्धांतों की अवधारणा, मापन, गणना, और प्रभावों को भी समझ सकेंगें।
5. क्रेडिट मान – सैद्धांतिक – 06
6. कुल अंक – 30+70=100 न्यूनतम उत्तीर्ण अंक – 35
7. व्याख्यान की कुल अवधि– 90 घंटे

| इकाई | पाठ्यक्रम की विषयवस्तु |
|---|---|
| इकाई–1 | **समष्टि अर्थशास्त्र की प्राचीन भारतीय अवधारणा :–**<br>1. समष्टि अर्थशास्त्र का भारतीय दृष्टिकोण<br>2. राष्ट्रीय आय की अवधारणा<br>3. आय ऋण एवं दान की प्राचीन भारतीय मान्यता<br>4. कौटिल्य के अनुसार प्रमुख आर्थिक नीतियां<br>5. सम्पत्ति एवं सम्पत्ति के वितरण के संबंध में प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण<br>**गतिविधियां– भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चा।** |
| इकाई–2 | **समष्टि अर्थशास्त्र की अवधारणा :–**<br>1. समष्टि अर्थशास्त्र की परिभाषा, विषयवस्तु, महत्व एवं सीमाएं<br>2. समष्टि और व्यष्टि अर्थशास्त्र में अंतर्संबध<br>3. समष्टि आर्थिक चर–स्टॉक एवं प्रवाह<br>4. आय का चक्रीय प्रवाह<br>5. राष्ट्रीय आय की परिभाषा एवं विभिन्न अवधारणाएं<br>6. राष्ट्रीय आय को मापने की विधियां<br>7. राष्ट्रीय आय का सामाजिक लेखांकन<br>8. राष्ट्रीय आय एवं आर्थिक कल्याण<br>**गतिविधियां– समष्टि एवं व्यष्टि अर्थशास्त्र का तुलनात्मक चार्ट निर्माण।** |

Contd------2

| | |
|---|---|
| इकाई–3 | **रोजगार की अवधारणा एवं निर्धारण : –**<br>1. कौटिल्य के रोजगार की अवधारणा<br>2. रोजगार का प्रतिष्ठित सिद्धांत, बाजार नियम एवं पीगू का दृष्टिकोण<br>3. कींस का रोजगार सिद्धांत – समग्र मांग फलन, समग्र पूर्ति फलन, प्रभावपूर्ण मांग<br>4. विकासशील देशों में कींस के रोजगार सिद्धांत की व्यावहारिकता<br>5. उपभोग का मनोवेज्ञानिक नियम<br>6. उपभोग फलन – सीमांत उपभोग प्रवृत्ति, औसत उपभोग प्रवृत्ति, सीमांत बचत, प्रवृत्ति, औसत बचत प्रवृत्ति<br>7. गुणक एवं त्वरक सिद्धांत<br>**गतिविधियां– समूह परिचर्चा** |
| इकाई–4 | **विनियोग :–**<br>1. विनियोग के संबंध में भारतीय दर्शन<br>2. विनियोग – अर्थ, प्रकार एवं प्रेरणा<br>3. पूंजी की सीमांत क्षमता<br>4. विनियोग की सीमांत क्षमता<br>5. कींस का तरलता पसंदगी सिद्धांत<br>6. वास्तविक क्षेत्र में निवेश बचत (IS) वक्र के साम्य का निर्धारण एवं मौद्रिक क्षेत्र के साम्य LM वक्र का साम्य निर्धारण IS-LM मॉडल<br>7. मौद्रिक नीति – अर्थ, उपकरण एवं प्रभावशीलता<br>8. राजकोषीय नीति – अर्थ, उपकरण एवं प्रभावशीलता<br>**गतिविधियां– वर्तमान मौद्रिक नीति की समीक्षा** |
| इकाई– 5 | **मुद्रास्फीति एवं अवस्फीति, व्यापार चक्र :–**<br>1. मुद्रास्फीति, अवस्फीति, स्फीतिजनित मंदी का अर्थ<br>2. मुद्रास्फीति के प्रकार एवं प्रभाव<br>3. मुद्रास्फीति के सिद्धांत – मांग प्रेरित स्फीति एवं लागत प्रेरित मुद्रा स्फीति तथा मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करने के उपाय<br>4. फिलिप्स चक्र<br>5. भारत में मुद्रास्फीति का मापन थोक मूल्य सूचकांक WPI, उपभोक्ता मूल्य सूचकांक CPI जीडीपी. रिफ्लेक्टर<br>6. व्यापार चक्र का अर्थ और उसकी विभिन्न अवस्थाएं<br>7. व्यापार चक्र के प्रमुख सिद्धांत<br>**गतिविधियां– समूह परिचर्चा**<br>**सार बिंदु – समष्टि अर्थशास्त्र, स्टॉक, प्रवाह, राष्टीय आय, आर्थिक कल्याण, समग्र मांग फलन, समग्र पूर्ति फलन, प्रभावपूर्ण मांग, उपभोग फलन, गुणक, त्वरक, पूंजी की सीमांत क्षमता, विनियोग की सीमांत क्षमता, सरलता पसंदगी, मौद्रिकनीति, राजकोषीय नीति, मुद्रास्फीति, अवस्फीति, स्फीति जनित मंदी, व्यापार चक्र।** |

Contd------3

**संदर्भ ग्रंथ :**

1. आहूजा एच.एल. – उच्चतर समष्टि अर्थशास्त्र, एस.चन्द्र एण्ड कंपनी लि. दिल्ली
2. झिंगन एम.एल. – समष्टि अर्थशास्त्र, वृंदा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
3. सेठी टी.टी. – समष्टि अर्थशास्त्र, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा
4. वैश्य एम.सी. – समष्टि अर्थशास्त्र, विकास पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली
5. राणा. के.सी. – एव के.एन. वर्मा – समष्टि आर्थिक विश्लेषण, विशाल पब्लिकेशन,जालंधर

कस्तूरबागांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित
**कस्तूरबाग्राम रूरल इंस्टीट्यूट, कस्तूरबाग्राम, इंदौर**
(स्वशासी आवासीय कन्या महाविद्यालय, देवी अहिल्या वि.वि., इंदौर से संबद्ध)
E-mail:krl.extension@gmail.com, Website:http.www.kgri.org, Ph. Fx-0731-2874065
// शैक्षणिक सत्र: 2025–26 //

स्थापना वर्ष:1963

## कक्षा : बी. ए. प्रथम वर्ष
## विषय :– हिन्दी साहित्य
## सेमेस्टर – II

1. **पाठ्यक्रम का कोड –**
2. **पाठ्यक्रम का शीर्षक – प्राचीन एवं मध्य युगीन हिन्दी काव्य**
3. **पाठ्यक्रम का प्रकार – मेजर – II**
4. **पाठ्यक्रम अध्ययन की उपलब्धियां :–**
   1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ साथ प्राचीन एवं मध्य युगीन हिन्दी काव्य को सुदीर्घ परंपरा से परिचित होंगे।
   2. प्रसिद्ध रचनाओं के अध्ययन से देश की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित होंगे।
   3. विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास होगा, उनकी जीवन दृष्टि का विस्तार होगा जिससे वह जीवन एवं जीवन मूल्यों को समझने में सक्षम होंगे।
   4. रचनात्मक कौशल में दक्षता होगी जिससे उन्हें रोजगार की अनेक संभावनाएं मिलेगी।
5. **क्रेडिट मान – सैद्धांतिक – 06**
6. **कुल अंक – 30+70=100 न्यूनतम उत्तीर्ण अंक – 35**
7. **व्याख्यान की कुल अवधि– 90 घंटे**

| इकाई | विषय सामग्री | अवधि |
|---|---|---|
| 1 | **हिन्दी साहित्य और भारतीय ज्ञान परम्परा –**<br>1. भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा<br>2. भारतीय ज्ञान परंपरा में साहित्य चिंतन<br>3. प्राचीन हिंदी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा: स्वरूप एवं अंतरसंबंध<br>4. मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा: स्वरूप एवं अंतर संबंध<br><br>**गतिविधि** – आलेख लेखन। | |
| 2 | **हिन्दी साहित्य का इतिहास – पृष्ठभूमि एवं प्रमुख कवि –**<br>1. काल विभाजन एवं नामकरण<br>2. आदिकाल : सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि<br>3. आदिकालीन साहित्य : प्रमुख प्रवृत्तियां<br>4. आदिकालीन प्रमुख कवि : समीक्षा एवं व्याख्या–<br>1. गोरखनाथ– गोरखनाथ सबदी 2. चंदबरदाई<br><br>**गोरखनाथ सबदी।**<br>1. मनसा मेरी ब्यौपार बांधी.....<br>2. अवधू बोल्या तत विचारी .....<br><br>**चंदबरदाई – कनबज समय** .....<br>1. चढि तुरंग चहुवान, पान फैरीत परद्दार<br>2. हंस न्याय दुब्बारो, मुक्ति लम्भै न चुनंतह<br>3. पुरै न लग्गी आरि, भारि लद्यौ न पिट्ठ पर<br><br>**गतिविधियां** – 1. हिन्दी साहित्य के आदिकाल की प्रवाह तालिका (फ्लो चार्ट) बनाना। 2. काव्य पाठ एवं रचनाओं की मौलिक समीक्षा। 3. विद्यार्थियों के विचार आमंत्रित करना, समूह चर्चा करवाना। | |

अविरत.....2

23/9/25 23/9/25

| | |
|---|---|
| 3 | **भक्तिकाल – निर्गुण भक्तिकाल एवं प्रमुख कवि –**<br>1. भक्ति आंदोलन – सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि<br>2. निर्गुण भक्ति काव्य एवं प्रवृत्तियां<br>3. प्रमुख कवि एवं काव्य – कबीर, रैदास (ज्ञानश्रयी शाखा)<br><br>**कबीर – साखी (गुरूदेव को अंग) –**<br>1. सतगुरू सवॉन को सगा .....<br>2. सतगुरू के सदके करूँ .....<br>3. सतगुरू सॉचा सूरिवॉ .....<br>4. पीछे लागा जाई था .....<br>5. ज्ञान प्रकास्या गुरू मिल्या .....<br><br>**पद –**<br>1. दुलहनीं गाबहु मंगलचार<br>2. पंडित बाद बंदते झूठा<br>3. लोका अति के भोरा रे<br><br>**रैदास –**<br>1. राम दिन संसे गॉठि न छूटे .....<br>2. भगति दुर्लभ सुनहूं रे भाई .....<br>3. तेही मोही मोही तोही अंतरू कैसा .....<br>4. जड तुम गिरिवर तउ हम मोरा .....<br><br>**जायसी** – (प्रेमाश्रयी शाखा) – मानसरोवर खण्ड –<br>1. एक दिवस पून्यौ – तिथि आई .....<br>2. खेलत मानसरोवर गई .....<br>3. मिलहिं रहसि सब चढहिं डिंडोरी .....<br>**गतिविधियां** – 1. काव्य पाठ, सरसर गीत प्रस्तुतीकरण। 2. संत रैदास, के साहित्य में निहित सामाजिक संदेश पर विद्यार्थियों के मौलिक विचार आमंत्रित करना। |
| 4 | **सगुण भक्ति काव्य एवं प्रमुख कवि –**<br>1. सगुण भक्ति काव्य : प्रमुख प्रवृत्तियां<br>2. प्रमुख कवि, तुलसी, सूर, मीराबाई<br><br>**तुलसीदास –**<br>1. तू दयालू दीन हो, तू दानि, हौं भिखारी<br>2. ऐसी मूढता या मन की<br>3. क्ह रघुपति सुनु भामिनि बाता ..... प्रेम सहित सब कथा सुनाई<br><br>**सूरदास –**<br>1. अबगति – गति कछु कहत न आवै ।<br>2. मैया मोहि दाउ बहुत खिझाायौ<br>3. संदेसो देवकी सौ कहियो।<br>4. बिन गोपाल बैरिन भई कुंजें। |

23/9/25 23/9/25

अविरत.....3

**मीराबाई पद –**

1. मण थे परस हरि रे चरण।
2. पंपइया म्हारो कब रौ बैर चितार्‌यौ।
3. होरी खेलत है गिरधारी
4. पायोजी मैं तो राम रतन धन पायो।
5. हैरी म्हा तो दरद दिवॉणी म्हारों .....

**गतिविधियां** – 1. स्थानीय साहित्यकारों के गीतों का संकलन ।
2. स्थानीय साहित्यकारों के काव्य की समीक्षा। 3. कवियों की रचनाओं का सस्वर पाठ।
4. सामाजिक संदेश देने वाले स्वरचित कविताओं का प्रस्तुतिकरण।

5 **रीतिकाल : पृष्ठभूमि एवं प्रमुख कवि –**

1. रीतिकाल : सामाजिक – सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
2. रीतिकाव्य : प्रमुख भेद ( रीतिबद्ध, रीति सिद्ध, रीति मुक्त)
3. रीति–काव्य : प्रमुख प्रवृत्तियां
4. प्रमुख कवि – केशव, भूषण, बिहारी, घनानंद। अन्य कवि – रहीम, रसखान।

**व्याख्यांश –**

**कैशव –**

1. सिंघ तर्‌यो उनको बनरा .....
2. पेट चढ्‌यो पलना पलका .....
3. हाथी न साथी न घोडे .....
4. पाहन ते पतिनी करि .....

**भूषण –**

1. प्रेतिनी, पिशाचडरू निसाचर निसाचरिहुं
2. उतै पातसाहज के गजन के ठट्‌ट छूटे
3. जीत्यो सिवराज सलहेरि को समय मुनि
4. चले चंद्रबान घनबान औ कुहूकबान
5. हैबर हरट्‌ट साजि गैबर गरट्‌ट सम

**बिहारी –**

1. मेरी भव–बाधा हरौ .....
2. सीस–मुकुट, कटि काछनी, कर मुरली .....
3. कोउ कौटिक संग्रहौ, कोउ लाख हजार .....
4. नर की अरू नल–नीर की .....
5. तो पर बारौं उरबसी .....
6. अजौ तरयौना ही रहौ, श्रुति सेवत इक रंग .....
7. झीने पट में झुलमुली .....
8. ओछे बडे न है सकैं .....
9. डिगत पानि डिगुलात गिरि .....
10. या अनुरागी, चित्त की गति.....

**घनानंद –**

1. अति सूचो सनेह को मारग .....
2. परकाजहिं देह कौ धारि फिरों .....
3. अंतर में बासी पै, प्रवासी को सो अंतर है .....
4. चंद चकौर की चाह करैं, हम आनंद .....

अविरत.....4

23/9/25 23/9/25 23/9/25

**रहीम –**

1. रहिमन विपदा हूँ भली जे .....
2. रहिमन वे नर चुके .....
3. रहिमन धागा प्रेम का .....
4. खीरा सिर ते काटिए .....
5. जे रहीम उत्तम प्रकृति .....
6. कदली सीप भुजंग मुख .....

रहीमन दैखि बडेन को लघु न दीजिए डार

**रसखान –**

1. मानुष हौं तो बही रसखान .....
2. शेष गनेश सुरेश दिनेश .....
3. या लकुटी अरू कामरिया .....
4. धूरि भरे अति सौभित .....
5. सुनिये सबकी कहिए न कछू .....

**गतिविधि**–1. भक्तिकालीन काव्य की प्रवाह तालिका (फ्लो चार्ट) बनाना।
2. भक्तिकालीन कवियों की कविताओं में नीतिपरक संदेशों का अन्वेषण करना
3. उनमें निहित नीति वाक्यों का संकलन करना।
4. भक्तिकालीन कविता में निहित सामाजिक समरसता को खोजकर उदाहरण प्रस्तुत करना। 5. कविताओं में निहित रस, छंद, अलंकार, बिम्ब और प्रतीकों की पहचान करना। पोस्टर बनाना, प्रवाह तालिका (चार्ट बनाना)

**संदर्भ पुस्तकें :–**


1. संत रैदास जीवनी, एवं पदावली – संपादन – मिश्र, अशोक आदिवासी लोक कला अकादमी, भोपाल।
2. सिंह, कुँवरपाल, भक्ति आंदोलन, इतिहास और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
3. वर्मा, धनंजय, सुगम हिन्दी, म.प्र. हिंदी अकादमी भोपाल
4. वर्मा, धीरेंद्र, सूरसागर सार, सं. हरिशचंद्र प्रकाशन मंदिर, दिल्ली
5. गोस्वामी, तुलसीदास, विनय पत्रिका, गीता प्रेस, गोरखपुर
6. गोस्वामी, तुलसीदास, विनय पत्रिका, गीताप्रेस, गोरखपुर
7. केशवदास, रामचंद्रिका – टीकाकार, लाला भगवानदीन, प्रकाशन केंद्र,लखनउ
8. नगेंद्र, डॉ. संपादक, हिंदी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिकेशन, दिल्ली
9. मिश्रा, विश्वनाथ प्रसाद, घनानंद, कवित्त, साहित्य सरोवर, इलाहाबाद
10. मिश्र, विद्यानिवास, रहीम ग्रंथावली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. पाण्डेय, मैनेजर, भक्ति आंदोलन, और सूरदास का काव्य – वाणी प्रकाशन
12. रत्नाकर जगन्नाथप्रसाद, बिहारी रत्नाकर, रत्ना पब्लिकेशन, वाराणसी
13. शर्मा, रामकिशन, शर्मा सुजीत कुमार, मीराबाई, की संपूर्ण पदावली, लोकभारती प्रकाशन
14. शुक्ल रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
15. पाण्डेय राजबली, हिंदी साहित्य का वृहत इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।


23/9/25

---

स्थापना वर्ष:1963

कस्तूरबागांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित

**कस्तूरबाग्राम रूरल इंस्टीट्यूट, कस्तूरबाग्राम, इंदौर**

(स्वशासी आवासीय कन्या महाविद्यालय, देवी अहिल्या वि.वि., इंदौर से संबद्ध)

E-mail:krl.extension@gmail.com, Website:http.www.kgri.org, Ph. Fx-0731-2874065

// शैक्षणिक सत्र: 2025–26 //

**Syllabus – B. A. IInd Sem. – Academic Session – 2025-26**
**(Under NEP 2020 & As per Ordinance 14-1)**

**कक्षा : बी. ए. प्रथम वर्ष**
**विषय :– हिन्दी साहित्य**
**सेमेस्टर – II**

1. **पाठ्यक्रम का कोड –**
2. **पाठ्यक्रम का शीर्षक – आधुनिक हिन्दी काव्य**
3. **पाठ्यक्रम का प्रकार – मेजर – III**
4. **पाठ्यक्रम अध्ययन की उपलब्धियां :–**
   1. विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी भारतीय ज्ञान परंपरा से विज्ञ होंगे।
   2. विद्यार्थी भारतीय जीवन मूल्यों को समझने एवं आत्म निर्भर बनने में सक्षम होंगे।
   3. भारतीय नैतिक मूल्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं चरित्र निर्माण में सहायक होंगे जो भारतीय समाज एवं सशक्त राष्ट्र निर्माण का आधार है।
   4. साहित्य सृजन, शैक्षणिक क्षेत्र अन्य कलात्मक क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।
5. **क्रेडिट मान – सैद्धांतिक – 06**
6. **कुल अंक – 30+70=100 न्यूनतम उत्तीर्ण अंक – 35**
7. **व्याख्यान की कुल अवधि– 90 घंटे**

| इकाई | विषय सामग्री | अवधि |
|---|---|---|
| 1 | **भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक हिंदी काव्य –**<br>1. आधुनिक काल : सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि।<br>2. भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक हिंदी काव्य का अंतसंबंध।<br>3. भारतेंदु युगीन काव्य एवं प्रवृत्तियां<br>4. प्रमुख कवि एवं उनका काव्य (समीक्षा एवं व्याख्या)<br>**भारतेंदु हरिशचंद्र –**<br>रोवहुं सब मिलि के आवहुं भरत भाई .....<br>सबके ऊपर टिक्कस की आफत आई। हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाये।<br>**प्रतापनारायण मिश्र –**<br>जय जय जगत शिरोमणी भारत।<br>**गतिविधि** – 1. आलेख लेखन 2. शोध आलेख लेखन। | |
| 2 | **द्विवेदी युगीन काव्यः प्रवृत्तियां एवं प्रमुख कवि –**<br>1. द्विवेदी युगीन काव्य : सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि<br>2. प्रमुख कवि एवं काव्य (समीक्षा एवं व्याख्या)<br>**अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिओध" –**<br>1. मीठी बोली<br>2. एक बूंद<br>**रामनरेश त्रिपाठी –**<br>1. वह देश कौनसा है<br>**जगन्नाथ दास रत्नाकर –**<br>1. लै के उपदेश – औ– संदेस – पन ऊधो चले<br>2. पंचतत्व में जो सच्चिदानंद की सत्ता<br>3. ऊधौ कहो सूधौ सौ सनेस पहिले तो यह<br>4. कान्ह–दूत कैधों ब्रहम – दूत है पधारे आप<br>5. चिंता–मनी मंजुल पवारि धूरि–धारनि में<br>6. चुप रहो ऊधौ सूधौ पथ मथुरा कौ गहौ<br>7. ब्रज–रज रंजित सरीर सुभ ऊधव को | |

अविरत.....2

| | |
|---|---|
| | **मैथिलीशरण गुप्त –**<br>1. "सबकी नसों में पूर्वजों का पुण्य रक्त प्रवाह .....<br>संपत्ति और विपत्ति में विचलित कदापि न वक्ष हो"<br><br>**गतिविधि** – 1. काव्य पाठ। 2. काव्य का सस्वर प्रस्तुतीकरण। |
| 3 | **छायावादी काव्य : प्रवृत्तियां एवं प्रमुख कवि –**<br>1. छायावादी काव्य : युगीन पृष्ठभूमि<br>2. छायावादी काव्य : प्रमुख प्रवृत्तियां<br>3. प्रमुख कवि एवं काव्य<br><br>**जयशंकर प्रसाद –**<br>1. प्रकृति के यौवन का श्रृंगार ..... खिंची आवेगी सकल<br>2. समृद्धि<br><br>**सुमित्रानंदन पंत –**<br>1. ताज<br>2. ग्राम श्री<br><br>**सूर्यकांत त्रिपाठी निराला –**<br>1. वह तोडती पत्थर<br>2. जागो फिर एक बार<br><br>**महादेवी वर्मा –**<br>1. मैं नीर भरी दुख की बदली .....<br>1. चिर सजग आँखे .....<br><br>**गतिविधि** – 1. काव्य समीक्षा। 2. काव्य व्याख्या । |
| 4 | **छायावादोत्तर हिन्दी काव्य : प्रवृत्तियां एवं प्रमुख कवि –**<br>1. छायावादोत्तर युगीन काव्य की पृष्ठभूमि।<br>2. प्रमुख काव्य आंदोलन एवं प्रवृत्तियां।<br><br>**रामधारीसिंह दिनकर –**<br>1. "है बहुत बरसी धरित्री पर अमृत की धार .....<br>काट लेगा अंग, तीखी है बडी यह धार"<br>**सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय –**<br>1. हम नदी के द्वीप हैं<br>2. हमारा देश<br><br>**बालकृष्ण शर्मा नवीन –**<br>1. अरे तुम हो काल के भी काल<br>2. हम अनिकेतन<br><br>**नागार्जुन –**<br>1. कालिदास सच सच बतलाना<br>2. सिंदूर तिलकित भाल<br><br>**गतिविधि**– 1. काव्य समीक्षा। 2. भारतीय ज्ञान परंपरा के सदर्भ में।<br>2. वर्तमान संदर्भ में मोलिक उद्भावनाएं। |
| 5 | **साठोत्तर हिंदी काव्य : प्रवृत्तियां एवं प्रमुख कवित्त –**<br>1. साठोत्तर हिंदी काव्य : युगीन पृष्ठभूमि<br>2. प्रमुख प्रवृत्तियां<br>3. प्रमुख कवि |

अविरत.....3

**गजानन माधव मुक्तिबोध –**

1. भूल गलती

**भवानी प्रसाद मिश्र –**

2. निरापद, स्नेह शपथ

**नरेश मेहता –**

3. मृत्तिका

**कुँवर नारायण –**

1. **श्रेष्ठ का वरण**

"छा गयी उसी क्षण मानों गहरी शांति ..... न सीमित कर पाये।

**गतिविधियां–** पाठ्यक्रम अंतर्गत कविताओं से शब्द चयन संकलन एवं उनके नवीन अर्थ, संदर्भ।

**संदर्भ पुस्तकें :–**


1.कडेल, अशोक, भारती ज्ञान परंपरा, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपला
2. नारायण, कुँवर, आत्मजयी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
3. सं.पंत, कैलाशचंद, संवाद और हस्तक्षेप, भारतीय ज्ञान परंपरा म.प्र.राष्ट्रभाषा प्रचार समिति।
4. डेहरिया, प्रोफेसर, खेमसिंह, स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी साहित्य मप्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी
5. मुक्तिबोध, गजानन माधव, चाँद का मुंह टेडा है, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
6. देवताले, चंद्रकांत, हिंदी काव्य संकलन मप्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
7. रत्नाकर, जगन्नाथदास, उद्धव शतक, इंडिया प्रेस लिमि. प्रयागराज।
8. प्रसाद जयशंकर, कामायनी
9. स.नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर वेक्स, नौएडा
10. निराला, त्रिपाठी, सूर्यकांत, राग विराग
11. चक्रवर्ती, पीवी, भारतीय संस्कृति में विज्ञान के तत्व, मप्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी,भोपाल
12. गुप्त, मैथिलीशरण, भारत भारती, सेतु प्रकाशन, झांसी
13. उपाध्याय, राजकुमार, हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की समीक्षा मप्र.हिंदी ग्र.अ.भो.
14. शुक्ल, आचार्य, रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन नई दिल्ली
15. मिश्र, विद्यानिवास, भारतीय ज्ञान परंपरा, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रथ अकादमी भोपाल

कस्तूरबागांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित
**कस्तूरबाग्राम रूरल इंस्टीट्यूट, कस्तूरबाग्राम, इंदौर**
(स्वशासी आवासीय कन्या महाविद्यालय, देवी अहिल्या वि.वि., इंदौर से संबद्ध)
E-mail:krl.extension@gmail.com, Website:http.www.kgrl.org, Ph. Fx-0731-2874065
// शैक्षणिक सत्र: 2025–26 //
स्थापना वर्ष:1963

**Syllabus – B. A. IInd Sem. – Academic Session – 2025-26**
**(Under NEP 2020 & As per Ordinance 14-1)**

## कक्षा : बी. ए. प्रथम वर्ष
## विषय :– हिन्दी साहित्य
## सेमेस्टर – II

1. **पाठ्यक्रम का कोड –**
2. **पाठ्यक्रम का शीर्षक – आधुनिक गीत नवगीत**
3. **पाठ्यक्रम का प्रकार – माइनर**
4. **पाठ्यक्रम अध्ययन की उपलब्धियां :–**
   1. विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से भारतीय ज्ञान परंपरा एवं संस्कृति से विज्ञ होंगे।
   2. विद्यार्थी भारतीय जीवन मूल्यों को समझने एवं आत्म निर्भर बनने में सक्षम होंगे।
   3. भारतीय नैतिक मूल्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं चरित्र निर्माण में सहायक होंगे जो भारतीय समाज एवं सशक्त राष्ट्र निर्माण का आधार है।
   4. साहित्य सृजन, शैक्षणिक क्षेत्र, अन्य कलात्मक क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।
5. **क्रेडिट मान – सैद्धांतिक – 04**
6. **कुल अंक – 30+70=100 न्यूनतम उत्तीर्ण अंक – 35**
7. **व्याख्यान की कुल अवधि– 90 घंटे**

| इकाई | विषय सामग्री | अवधि |
|---|---|---|
| 1 | **भारतीय ज्ञान परंपरा और गीत –**<br>1. गीत : स्वरूप एवं पारिभाषिक विमर्श<br>2. गीत के मूल तत्व एवं विषय वस्तु<br>3. गीत का उद्‌भव और विकास : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य<br>4. विभिन्न गीत आंदोलन<br>**गतिविधि** – 1. आलेख लेखन। 2. समूह चर्चा। | |
| 2 | **नवगीत की अवधारणा : नवता का निकष –**<br>1. नवगीत और गीत का अंतर्संबंध<br>2. नवगीत : भाव एवं विषयगत नवीनता<br>3. गीत – नवगीत : साम्य – वैषम्य<br>**गतिविधि** – 1. तुलनात्मक अध्ययन, आरेख, रेखाचित्र, चार्ट | |
| 3 | **स्वतंत्रता पूर्व के आधुनिक गीतकार –**<br>**सोहनलाल द्विवेदी –**<br>1. वंदना के इन स्वरों में .....<br>2. सीमान्त के पहरूए .....<br>**हरिवंश राय बच्चन –**<br>1. जो बीत गयी सो बात गई<br>2. जुगनू<br>**नरेंद्र शर्मा –**<br>1. मेरा मन<br>2. अन्न, वस्त्र–हीन–दीन थी निरक्षरा .....<br>**नीरज –**<br>1. हिम्मत मत हार रे<br>2. एक दिन भी जी मगर तू ताज .....<br>**गतिविधि**–1. नवगीतों का पाठ एवं समीक्षा। 2.स्वरचित गीत/नवगीत पाठ | |

अविरत.....2

| | |
|---|---|
| 4 | **स्वतंत्रयोत्तर कालीन गीत – नवगीतकार –**<br>**रामावतार त्यागी –**<br>1. सादगी को शहर पी गये।<br>2. आओ गुलाब बोयें।<br>**चंद्रसेन विराट –**<br>1. सबसे पहले देश हमारा<br>2. निर्माण बुलाते हैं तुझको<br>**विनोद निगम –**<br>1. सबकी उडती अलग ध्वजाएं<br>2. फूलों के गजरों सा देश<br>**महेश्वर तिवारी –**<br>1. धूप में जब भी जले हैं पॉव .....<br>2. धीरे धीरे फैल रही है सीमाएं .....<br>**गतिविधि–** 1. नवगीतों का सस्वर पाठ/संगीतमय प्रस्तुतिकरण। |
| 5 | **गीत समीक्षा : रचनात्मक भावभूमि –**<br>1. प्रमुख गीत समीक्षक : सृष्टि और दृष्टि<br>2. गीत – पत्रिकाओं की विकास यात्रा<br>3. गीत रचना : अभ्यास कार्य<br>**गतिविधियां–** 1. गीतकारों से साक्षात्कार। 2. नवगीतों की समीक्षा।<br>3. नवगीतकारों का संक्षिप्त परिचय एवं नवगीतों का संकलन। |
| | **संदर्भ पुस्तकें :–**<br>1. कडेल, अशोक, भारती ज्ञान परंपरा, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपला<br>2. डेहरिया, प्रोफेसर, खेमसिंह, स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी साहित्य मप्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी<br>3. सिंह, डॉ.ओमप्रकाश, नई सदी के नवगीत, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली।<br>4. नीरज गोपालदास, लहर पुकारे, आत्माराम एण्ड संस<br>5. विराज चंद्रसेन, मिट्टी मेरे देश की, प्रगति प्रकाशन, आगरा<br>6. चक्रवर्ती, पीवी, भारतीय संस्कृति में विज्ञान के तत्व, मप्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल<br>7. रघुवंशी, प्रेमशंकर, नवगीत स्परूप और विश्लेषण, अनुीाव प्रकाशन, गाजियाबाद<br>8. उपाध्याय, डॉ. राजकुमार, हिंदी साळितय के इतिहास लेखन की समीक्षा,मप्र.हि.ग्रं.अका.<br>9. गौतम, राजेंद्र, हिंदी नवगीत उद्भव और विकास, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली।<br>10. मिश्र, विद्यानिवास, भारतीय ज्ञान परंपरा, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रथ अकादमी भोपाल |

---

कस्तूरबागांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित

# कस्तूरबाग्राम रूरल इंस्टीट्यूट

कस्तूरबाग्राम, इंदौर (म. प्र.)

स्वशासी कन्या महाविद्यालय, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से संबद्ध

स्थापना वर्ष 1963 : http://www.kgri.org : 0731-2874065

kri.extension@gmail.com

## कक्षा : बी. ए. प्रथम वर्ष

## विषय :– समाजशास्त्र

## सत्र: 2025–26

## सेमेस्टर – II

1. पाठ्यक्रम का कोड – C2
2. पाठ्यक्रम का शीर्षक – भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाएं एवं प्रकियाएं
3. पाठ्यक्रम का प्रकार – मेजर – II
4. पाठ्यक्रम अध्ययन की उपलब्धियां :–
   1. इस पाठ्यक्रम की रचना भारतीय समाज की सामाजिक सांस्कृतिक विविधता की विलक्षण विशेषताएं तथा सामाजिक प्रकियाओं जो कि सामाजिक व्यवस्था के निर्ताण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, के बारे में जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से की गई है।
   2. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी भारत में विवाह परिवार एवं नातेदारी व्यवस्था के विभिन्न स्वरूपों के बारे में जान सकेंगे।
   3. समाजीकरण की प्रकिया की सैद्धांतिक जानकारी विद्यार्थियों को मानव प्राणी से सामाजिक प्राणी के रूपांतरण की प्रकिया को समझने में सक्षम बनाता है।
   4. विभिन्न प्रकार की सामाजिक प्रकियाओं की अवधारणात्मक समझ विद्यार्थियों में विभिन्न सामाजिक मुद्दों से निपटने में विश्लेषणात्मक क्षमता को समृद्ध करती है।
   5. यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को विघटनकारी सामाजिक प्रकियाओं के निहितार्थ की समालोचनात्मक विश्लेषण में सक्षम बनाता है।
   6. यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को सामाजिक परिवर्तन की शक्तियों जैसे आधुनिकीकरण, संस्कृतिकरण तथा नगरीकरण को समझने में सक्षम बनाता है।
5. क्रेडिट मान – सैद्धांतिक – 06
6. कुल अंक – 30+70=100 न्यूनतम उत्तीर्ण अंक – 35
7. व्याख्यान की कुल अवधि– 90 घंटे

| इकाई | पाठ्यक्रम की विषयवस्तु |
|---|---|
| इकाई–1 | भारतीय सामाजिक संस्थाएं –<br>1. परिवार व्यवस्था : अर्थ, विशेषताएं, प्रकार एवं महत्व<br>2. विवाह संस्था : अर्थ, विशेषताएं, प्रकार, महत्व, वैदिक परम्परा में विवाह<br>3. नातेदारी : अर्थ, विशेषताएं, महत्व<br>गतिविधियां– 1.विद्यार्थी द्वारा अपने परिवार के नातेदारी संबंधों अथवा वंशावली का वृक्ष चार्ट बनाना। 2.वैवाहिक नियमों पर आधारित परियोजना कार्य। |
| इकाई–2 | समाजीकरण –<br>1. समाजीकरण : अर्थ, विशेषताए, प्रकार<br>2. समाजीकरण के सोपान<br>3. भारत में समाजीकरण के प्रमुख अभिकरण<br>4. समाजीकरण के सिद्धांत<br>गतिविधियां– समाजीकरण की प्रकिया में संस्कारों के महत्व पर कक्षा में परिचर्चा का आयोजन। |

Contd.....2

30.01.25

| | |
|---|---|
| इकाई–3 | **सहयोगात्मक सामाजिक प्रकियाएं एवं अंर्तसंबंध –**<br>1. सामाजिक प्रकिया : अर्थ, विशेषताएं, प्रकार<br>2. सहयोगात्मक सामाजिक प्रकिया (अर्थ, विशेषता, महत्व)<br>2.1 सहयोग<br>2.2 व्यवस्थापन<br>2.3 सात्मीकरण<br>**गतिविधियां–** वसुधैव कुटुम्बकं की परिभाषा संकल्पना पर निबंध लेखन प्रतियोगिता। |
| इकाई–4 | **पाश्चात्य प्रभाव : सामाजिक प्रकियाएं एवं अवधारणाएं (अर्थ, विशेषताएं, दुष्परिणाम) –**<br>1. प्रतिस्पर्धा<br>2. संघर्ष<br>3. सामाजिक विचलन<br>4. सांस्कृतिक भ्रम<br>**गतिविधियां–** दैनिक, समाचार पत्रों पर आधारित उपरोक्त संक्लपनाओं का अंर्तवस्तु विश्लेषण। प्रतिस्पर्धा एवं सांस्कृतिक भ्रम पर कक्षा में समूह चर्चा। |
| इकाई– 5 | **सामाजिक सांस्कृतिक परिवत्रन की प्रकियाएं – (अर्थ, विशेषता, कारण एवं परिणाम) –**<br>1. आधुनिकीकरण<br>2. नगरीकरण<br>3. संस्कृतिकरण<br>**गतिविधियां–** सामाजिक सांस्कृतिक परिवत्रन की प्रकियाओं और परिणामों पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन। |
| | **संदर्भ ग्रंथ :**<br>1- भदौरिया एस.एस., पाटील अशोक डी., समाजशास्त्र, म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी।<br>2- गुप्ता अशेष दास, समाजशास्त्र की मूलभूत अवधारणाएं, भाल्व पब्लिकेशन<br>3- हुसैन मुजतबा, प्रारंभिक समाजशास्त्र, जवाहर पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स<br>4- मिश्र पंजक, रामेश्वर, अद्वितीय समाजशास्त्र– प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली<br>5- महाजन धर्मवीर, परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र, राजस्थान हिंदी ग्र.अका.<br>6- परिमल बी.आर., समाजशास्त्र जवाहर पब्लिशर्स, नई दिल्ली<br>7- सिंह, जे.जी., तृतीय संस्करण, समाजशास्त्र अवधारणाएं एवं सिद्धांत, पीएचआर्ठ लर्निंग प्रा. लिमिटेड, दिल्ली।<br>8- सिंघी, नरेंद्र कुमार, गोस्वामी वसुधाकरः समाजशास्त्र विवेचन, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी<br>9- Ahuja, Ram, Indian Social System, Rawat Publication, New Delhi.<br>10- Bierstedt, Robert Social Order, Tata McGraw Hill Publication company limited, New Delhi.<br>11- Dube, S. C., Modernixation and Development: The Search for Alternative paradigm, Vista, New Delhi. |

.....

कस्तूरबागांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित

# कस्तूरबाग्राम रूरल इंस्टीट्यूट

कस्तूरबाग्राम, इंदौर (म. प्र.)

स्वशासी कन्या महाविद्यालय, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से संबद्ध

स्थापना वर्ष 1963

kri.extension@gmail.com

: http://www.kgri.org

: 0731-2874065

## कक्षा : बी. ए. प्रथम वर्ष
## विषय :– समाजशास्त्र
## सत्रः 2025–26
## सेमेस्टर – II

1. पाठ्यकम का कोड – C3
2. पाठ्यकम का शीर्षक – भारतीय समाज एवं संस्कृति
3. पाठ्यकम का प्रकार – मेजर – III
4. पाठ्यकम अध्ययन की उपलब्धियां :–
   1. विद्यार्थी भारतीय समाज के परंपरागत वैचारिक आधार एवं सामाजिक जीवन पद्धति को समझ सकेंगे।
   2. विद्यार्थी जनजातीय समाज के विभिन्न आयामों एवं उनकी संस्कृति के विशिष्ट पहलुओं से अवगत हो सकेंगें।
   3. विद्यार्थी ग्रामीण जीवन शैली एवं लोक संस्कृति की मूलभूत अवधारणा को समझ सकेंगें।
   4. विद्यार्थी नगर एवं उसके विभिन्न स्वरूपों के गहन पक्षों से परिचित हो सकेंगें।
   5. विद्यार्थी भारतीय समाज की समकालीन चुनौतियों, सामाजिक समस्याओं एवं उनके समाधान के प्रति जागरूक हो सकेंगे।
5. केडिट मान – सैद्धांतिक – 06
6. कुल अंक – 30+70=100 न्यूनतम उत्तीर्ण अंक – 35
7. व्याख्यान की कुल अवधि– 90 घंटे

| इकाई | पाठ्यकम की विषयवस्तु |
|---|---|
| इकाई–1 | **भारतीय समाज के परम्परागत आधार –**<br>1. पुरूषार्थ<br>3. आश्रम व्यवस्था<br>4. संस्कार<br>5. कर्म का सिद्धांत<br>**गतिविधियां–** मानव जीवन में संस्कारों की उपयोगिता पर आलेख रचना। |
| इकाई–2 | **जनजातीय समाज एवं संस्कृति –**<br>1. जनजाति : अर्थ, विशेषताए (भारतीय संदर्भ में)<br>2. जनजातियों का भौगोलिक, भाषायी एवं सांस्कृतिक वितरण<br>3. राष्ट्र निर्माण में जनजातियों का योगदान : (मध्यप्रदेश के संदर्भ में)<br>**गतिविधियां–** जनजातीय वेशभूषा, आभूषण, कला, पर्व आदि पर आधारित चित्रमय प्रतिवेदन। |

Contd.....2

30.9.25

| | |
|---|---|
| इकाई–3 | **ग्रामीण समाज एवं संस्कृति –**<br>1. ग्रामीण समाज : अर्थ, परिभाषा, विशेषताएं<br>2. ग्रामीण जीवनशैली, लोक संस्कृति<br>3. आदर्श ग्राम की अवधारणा<br>**गतिविधियां– ग्रामीण समाज एवं संस्कृति पर आधुनिक तकनीकि के प्रभाव का क्षेत्रीय अध्ययन पर आधारित परियोजना कार्य।** |
| इकाई–4 | **नगरीय समाज –**<br>1. नगरीय समाज : अर्थ, विशेषता<br>3. नगरीय सजाज के प्रकार<br>4. कस्बा<br>5. नगर<br>6. महानगर<br>**गतिविधियां– विद्यार्थी द्वारा अपने महाविद्यालय, मोहल्ला या क्षेत्रीय स्थल का स्वच्छता सर्वेक्षण पर प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण।** |
| इकाई– 5 | **भारतीय समाज की समकालीन चुनौतियां –**<br>1. राष्ट्रीय एकीकरण : अर्थ, मुद्दे, चुनौतियां<br>2. युवाओं की समस्या, वृद्धों की समस्या<br>**गतिविधियां– स्थानीय वृद्धाश्रमों का शैक्षिक भ्रमण अथवा वृद्धजनों की सामाजिक स्थिति पर आलेख रचना।** |
| | **संदर्भ ग्रंथ :**<br>1. आहूजा, राम, भारतीय समाज, रावत पब्लिकेशन, जयपुर<br>2. अग्रवाल विमल, भारतीय समाज पब्लिकेशन<br>3. दीक्षित ध्रुव कुमार, भारतीय समाज और संस्कृति – विनायक पब्लिशर्स, आगरा<br>4. दुबे श्यामचरण, भारतीय समाज, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली<br>5. दोषी, पी.एल., जैन, पी.सी., भारतीय समाज संरचना और परिवर्तन, मलिक प्रकाशन दिल्ली<br>6. निर्गुणे, बसंत, लोक संस्कृति, म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल<br>7. पांडे, राजबली, हिंदू संस्कार, सामाजिक–धार्मिक अध्ययन, चौखंबा विद्या भवन प्रकाशन<br>8. प्राचीन भारतीय समाज, अवस्थी शशि बिहार, हिंदी ग्रंथ अकादमी।<br>9. शर्मा, डीडी., गुप्ता, एम.एल., भारत में समाजः साहित्य भवन, आगरा<br>10. सिंह, अनुराधा, आदिवासी इतिहास और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली<br>11. तिवारी, शिव कुमार, म.प्र. की जनजातीय संस्कृति, म.प्र.हिंदी ग्रंथ अगादमी,भोपाल<br>12. Ahuja, Ram, Society in India Rawat Publication, Jaipur.<br>13. Mukharji, D.P., Indian Culture A. Sociological study, Rupal & Co.India.<br>14. Shah, A.M., Changes in the Indian Family, An Examination of Some Assumptions. |

.....

कस्तूरबागांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित

# कस्तूरबाग्राम रूरल इंस्टीट्यूट

कस्तूरबाग्राम, इंदौर (म. प्र.)

स्वशासी कन्या महाविद्यालय, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से संबद्ध

स्थापना वर्ष 1963

kri.extension@gmail.com

: http://www.kgri.org

: 0731-2874065

## कक्षा : बी. ए. प्रथम वर्ष
## विषय :– समाजशास्त्र
## सत्रः 2025–26
## सेमेस्टर – II

1. पाठ्यकम का कोड – M2
2. पाठ्यकम का शीर्षक – भारतीय समाज
3. पाठ्यकम का प्रकार – माईनर
4. पाठ्यकम अध्ययन की उपलब्धियां :–
   1. विद्यार्थी भारतीय समाज के सामाजिक दर्शन, एकात्मबोध, जनांकिकीय परिदृश्य को समझ सकेंगे।
   2. विद्यार्थी जनजातीय सामाजिक जीवन और उनके पर्यावरणीय चेतना के विविध आयामों को समझ सकेंगे।
   3. विद्यार्थी ग्रामीण जीवन शैली, पारिवारिक संरचना एवं लोक सांस्कृतिक परंपरा के विविध पहलुओं को समझ सकेंगे।
   4. विद्यार्थी नगरीय समाज, नगर नियोजन की अवधारणा एवं चुनौतियों से परिचित होंगे।
   5. विद्यार्थी महिला सशक्तिकरण, युवा तनाव एवं बाल संरक्षण के समाजशास्त्रीय विमर्श को समझ सकेंगे।
5. केडिट मान – सैद्धांतिक – 04
6. कुल अंक – 30+70=100 न्यूनतम उत्तीर्ण अंक – 35
7. व्याख्यान की कुल अवधि– 90 घंटे

| इकाई | पाठ्यकम की विषयवस्तु |
|---|---|
| इकाई–1 | **समाज की भारतीय आवधारणा त्रिस्तरीय सामाजिक संरचना, आरण्यक : ग्राम्य एवं नगर (नगरीय) –**<br>1. वैदिक दर्शन की प्रमुख विशेषताएं –<br>1.1 एकात्मबोध<br>1.2 समाजिक समरसता<br>1.3 विविधता में एकता<br>2. विभिन्न धर्मो के दार्शनिक आधार<br>**गतिविधियां– वैदिक साहित्य की उपरोक्त संकल्नाओं का अध्ययन कर आलेख रचना प्रस्तुत करना।** |
| इकाई–2 | **आरण्यक समाज एवं संस्कृति (मध्यप्रदेश के संदर्भ में) –**<br>1. जनजातियों की अवधारणा<br>2. मध्यप्रदेश की जनजातीय कला एवं संस्कृति<br>3. जनजातीय समाज में पर्यावरणीय चेतना<br>**गतिविधियां– सांस्कृतिक प्रतीक, गुदना, दीवार पेंटिंग, लोकनृत्य एवं वेशभूषा आदि का चित्रमय प्रतिवेदन प्रस्तुत करना।** |

Contd.....2

| | |
|---|---|
| इकाई–3 | **ग्रामीण समाज एवं संस्कृति –**<br>1. संयुक्त परिवार<br>2. जाति व्यवस्था<br>3. लोक संस्कृति एवं समृद्ध परम्परा<br>**गतिविधियां– ग्रामीण लोकसंस्कृति एवं परम्पराओं पर आधुनिकता के प्रभाव पर निबंध लेखन प्रतियोगिता।** |
| इकाई–4 | **नगरीय समाज एवं नियोजन –**<br>1. नगरः अर्थ, विशेषता, प्रकार<br>2. नगरीय सजाज की चुनौतियां एवं नियोजन<br>**गतिविधियां – विद्यार्थी अपने मोहल्ले या क्षेत्रीय स्थल का स्वच्छता सर्वेक्षण कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करना। नगर के ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की केस स्टडी** |
| इकाई– 5 | **समाजशास्त्रीय विमर्श (अर्थ, कारण, परिणाम, निवारण) –**<br>1. महिला शक्ति की पुनर्स्थापना<br>2. जनांकिकी परिदृश्य<br>3. युवा तनाव<br>4. बाल संरक्षण : चुनौतियां<br>**गतिविधियां–1. वैदिक साहित्य में वर्णित विभिन्न बिंदुषी महिलाओं की जीवनी पर आधारित परियोजना काय। 2. महाविद्यालय कैम्पस में पोस्टर्स, स्लोगन, बैनर क माध्यम से बाल संरक्षण जागरूकता अभियाान चलाना।** |
| | **संदर्भ ग्रंथ :**<br>1- अटल, योगेश, समाजशास्त्र, की समझ पियर्सन, नई दिल्ली।<br>2- भदोरिया एवं पाटील, समाजशास्त्र की प्राथमिक अवधारणाओं का परिचय, आगरा बुक इंटरनेशनल, आगरा<br>3- दीक्षित ध्रुव कुमार, भारतीय समाज और संस्कृति – विनायक पब्लिशर्स, आगरा<br>4- दिनकर, रामधारीसिंह, संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन,<br>5- धर्मपाल, भारत का स्वधर्म, बागदेवी प्रकाशन, बीकानेर<br>6- खत्री, अर्जुनदास, धर्म संस्कृति, समाज और राष्ट, इंदिरा पब्लिकेशन, भोपाल<br>7- परिमल, बीकर, समाजशास्त्र जवाहर पब्लिकेशन, नई दिल्ली<br>8- सिंह, जे. पी., समाजशास्त्र अवधारणाएं एवं सिद्धांत<br>9- सिंघी, नरेंद्र कुमार, समाजशास्त्र विवेचन, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी |

.....

कस्तूरबागांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित

# कस्तूरबाग्राम रूरल इंस्टीट्यूट

कस्तूरबाग्राम, इंदौर (म. प्र.)

स्वशासी कन्या महाविद्यालय, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से संबद्ध

स्थापना वर्ष 1963

: 0731-2874065

kri.extension@gmail.com

: http://www.kgrl.org

## कक्षाः बी.ए. / बी.एससी. / बी.एच.एससी. / बी.कॉम. प्रथम वर्ष

## विषय : Value Added Courses (VAC)

## मूल्य सवंर्धित पाठ्यकम

## सत्रः 2025–26

## सेमेस्टर – II

1. पाठ्यकम का कोड –
2. पाठ्यकम का शीर्षक – भारत बोध
3. पाठ्यकम का प्रकार – Value Added Courses (VAC)
   मूल्य सवंर्धित पाठ्यकम
4. पाठ्यकम अध्ययन की उपब्धियांः–
   1. भारत के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और संवैधानिक स्वरूप की मूलभूत समझ विकसित करना।
   2. भारतीय शिक्षा पद्धति ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति छात्रों में समझ विकसित करना।
   3. भारत के स्वतंत्रता संग्राम, लोकतांत्रिक विकास और वैश्विक भूमिका को समझने में सहायता करना।
   4. संविधान मे निहित दायित्वों एवं अधिकारों की जानकारी देकर छात्रों को जिम्मेदार नागरिक बनाना।
5. केडिट मान – सैद्धांतिक – 02
6. कुल अंक – 100 न्यूनतम उत्तीर्ण अंक – 35
7. व्याख्यान की कुल अवधि– 30 घंटे
8. परीक्षा का समय – 02 घंटे

| इकाई | पाठ्यकम की विषयवस्तु |
|---|---|
| इकाई–1 | **भारतीय इतिहास और सांस्कृतिक विरासत :–**<br>1. सिंधु, वैदिक और शास्त्रीय काल की विशेषताएं<br>2. सह–अस्तित्व और बहुलता की भारतीय अवधारणा<br>3. सांस्कृतिक प्रतीतः धर्म, स्थापत्य, संगीत, नाट्य लोकाचार<br>4. "वधुधैव कुटुम्बकम्" "एर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे सूत्रों की आधुनिक प्रासंगिकता<br>**गतिविधियां–** 1. लोक से संवाद, कार्यकम – परिवार या समुदाय के किसी बुजुर्ग से पारंपरिक जीवन मूल्य एवं ज्ञान पर चर्चा, और उसका लेखा–जोखा। |
| इकाई–2 | **भारतीय संविधान और नागरिक दायित्व :–**<br>1. वैदिक राजधर्म और आधुनिक संविधान<br>2. मूल अधिकार और कर्तव्य, धर्म–कर्तव्य, नैतिकता<br>3. युवा नागरिक और लोकतांत्रिक भागीदारी<br>4. शिक्षा का राष्ट्रनिर्माण में योगदान<br>**गतिविधियां–** 1. जननीति संवाद, छात्रों के बीच मॉक संविधान सभा या युवा संवाद का आयोजन, जिसमें भारत के मूल मूल्य प्रस्तुत करना। |

Contd------2

| | |
|---|---|
| इकाई–3 | **भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षा दृष्टिकोण :–**<br>1. भारतीय ज्ञान के स्रोत : वेद, उपनिषद, दर्शन, स्मृति, लोक–साहित्य<br>2. गुरूकुल परंपराः शिष्य केंद्रित शिक्षण, वाचिक, परंपरा ओर स्मृति आधारित अधिगम<br>3. शिक्षा का उद्देश्य : आत्मोत्कर्ष एवं लोकसंग्रह<br>4. शिक्षक की भूमिका : आचार्य देवो भवः, चरिच निर्माण, सामाजिक पुननिर्माण में योगदान।<br>**गतिविधियां**– 1. ज्ञानवार्ता, गोष्ठी, शास्त्रीय शिक्षा पर आधारित शिक्षण पद्धति, (उदाहरण, संवाद, स्मृति आधारित अभ्यास) का डेमो प्रस्तुत करना। 2. श्लोक गायन और उसका अर्थार्थ संवाद – विशेष रूप से शिक्षावल्ली (तैत्तिरीयोपनिषद्) गीता आदि से। |
| इकाई–4 | **भारत का जीवन दर्शन और सतत भविष्य की अवधारणा :–**<br>1. भारतीय जीवन दृष्टि : पुरूषार्थ चतुष्ट्य, आश्रम व्यवस्था और कर्तव्य आधारित नैतिकता।<br>2. प्रकृति के साथ सामंजस्य : यज्ञ, पंचमहाभूत, ऋतुचक्र और पर्यावरण संतुलन।<br>3. भारतीय अर्थादर्शन : अर्थशास्त्र, स्वदेशी, श्रमसंस्कृति और लोक–उद्यम<br>4. स्तत विकास और पर्यावरणीय न्याय की भारतीय अवधारणा<br>**गतिविधियां**– 1. सादा जीवन उच्च विचार विषय पर पोस्टर या स्लोगन लेखन। 2.भारतीय पर्यावरणीय परंपराओं (जैसे यज्ञ, वृक्ष पूजन, नदी महोत्सव आदि) पर समूह प्रस्तुति। 3. पंचमहाभूत और भारतीय जीवन दृष्टि। 4. स्वेदशी से आत्मनिर्भर भारत तक की यात्रा। |
| इकाई– 5 | **स्मकालीन भारत और वैश्विक भूमिका :–**<br>1. स्वतंत्रता संग्राम में धार्मिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक नेतृत्व की भूमिका<br>2. भारत का योगदान अंतरिक्ष विज्ञान, योग, कूटनीति, शांति दर्शन<br>3. आत्मनिर्भर भारत : परंपरा और नवाचार का समन्वय<br>4. वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतः सॉफ्ट पावर, बहुध्रुवीय विश्व में भूमिका<br>**गतिविधियां**– 1. छात्राओं द्वारा नीति–विकल्प प्रस्तुत करना। 2. भारत 2047 विषय पर निबंध। |
| | **संदर्भ ग्रंथ :**<br>1- काटदरे, इंदुमति, भारतीय शिक्षा, संकल्पना एवं स्वरूप, पुनरूत्थान प्रकाशन सेवा ट्स्ट, अहमदाबाद।<br>2- कुमार, कृष्ण, प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, श्री सरस्वती सदन, दिल्ली<br>3- सजुला चंद किरण, शिक्षा भारतीय परिप्रेक्ष्य, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान, नई दिल्ली<br>4- कपूर, कपित एवं सिंह, अवधेश कुमार, संपादक, इंडियन इंस्टीट्यूट, ऑफ एडवांस्ड स्टडी, शिमला, डी.के. प्रिंटर्स, नई दिल्ली<br>5- स्वरूप, देवेंद्र, संस्कृति एक नाम रूप अनेक, प्रतिभा प्रकाशन, नई दिल्ली।<br>6- स्वरूप, देवेंद्र, राष्टीय शिक्षा आंदोलन का इतिहास, हिंदी संस्करण, प्रतिभा प्रतिष्ठान, दई दिल्ली।<br>7- अग्रवाल, वसुदेव शरण, संपादक, राष्ट धर्म और संस्कृति। निबंध संचायन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।<br>8- मिश्र, रामेश्वर, पंकज, अद्वितीय समाजशास्त्र, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली<br>9- पाण्डेय, ओम प्रकाश, संपादक, भारत वैभव, राष्टीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली<br>10- सुब्बारायप्पा, बी.वी., भारतीय विज्ञान परंपरा, राष्टीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली। |

.....